शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

वैदिक साहित्य में ग्रामीण जीवन

सैयद हुसैन, अंशुदेवी
एम.फिल. (संस्कृत)
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

प्रस्तुत लेख 'वैदिक साहित्य में ग्रामीण जीवन'में ग्रामीण जीवन की विभिन्न जीवन शैलियों का वर्णन किया गया हैं। जिसके अन्तर्गत वैदिक साहित्य में ग्राम्य महत्ववर्ण-व्यवस्था,योग्यता,रहन-सहन,दैनिक क्रियाएं, कृषि तथा पशु-पालन आदि सम्मिलित हैं। इसके आधार पर इस लेख में यह बताया गया है कि वैदिक साहित्य व पौराणिक ग्रंथो में ग्राम्य जीवन कितना सुलभ था।

वैदिक साहित्य में ग्रामीण जीवन

वैदिक काल में ग्रामीण जीवन पद्धति अपने स्वयं के उद्योग एवं स्वरोजगार से चलती थी। जीविकोपार्जन के लिए वैदिक काल के ग्रामीण जन भिन्न.भिन्न प्रकार के शिल्प एवं कलाओं के ज्ञाता थे। जैसा कि ऋग्वेद की ऋचा 9.112.1.3 में उल्लेखित है:.

कारूरहं ततो भिषगुपल प्रक्षिणीननाद्य
नानाधियो वसूयवोअनुगा इव
तस्थिमैन्द्रायेंदोपरिस्त्रवद्यद्य ऋग्वेद ;9.112.1.3।

हम बढई का कार्य वाले के पिता और पुत्र वैद्य हैं, हमारी माता और पुत्री जौ पीसने का कार्य करती हैं, हम सभी विभिन्न कार्य करने वा ले हैं, जिस प्रकार ग्वाला गायों की सेवा करता है, सोम उसी प्रकार हम तेरी सेवा करते हैं, तू इन्द्र के निमित्त प्रवाहित होता है।

वैदिक युग में ग्रामीण परिवार में अर्थोपार्जन की चाह थी और अर्थोपार्जन के लिये वे किसी भी व्यवसाय से जुड़ सकते थे। इसमें वर्ण व्यवसाय बाधक नहीं थी जैसा कि कहा गया , "बढई, कुम्भकार, तक्षकार, ब्राह्मण, चिकित्सक, लोहार, गायक आदि उद्यमियों के नाम प्राप्त होते हैं। ये सब ग्रामीण अर्थव्यवस्था के केंद्र में थे। वर्ण के आधार पर कर्मो को अथवा कार्यो की व्यवस्था उत्तर वैदिक काल में अथवा ब्राह्मण ग्रंथों के समय अधिक प्रचलित हुई। तब भी कई परिवार ऐसे थे जिनमें एक परिवार के कई भिन्न -भिन्न व्यवसायों में संलग्न थे। कर्मो के अनुसार वर्ण व्यवस्था में भी उस समय तक अधि क दोष व्याप्त नहीं थे जैसे , ब्राह्मण.वेद अध्ययन, यजनयाजन एवं पठन -पाठन का कार्य करते थे , क्षत्रिय सेना संगठन , राजव्यवस्था , राष्ट्र की सुरक्षा तथा शक्ति संतुलन का कार्य करते थे , वैश्य कृषि कार्य , पशुपालन , छोटे.मोटे व्यवसाय इत्यादि का कार्य करते थे, शेष बचे हुए कार्य या छोटे-छोटे गृह उद्योग के कार्य अन्य वर्ण के द्वारा किया जाता था।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

वर्ण व्यवस्था के अनुसार कर्म की व्यवस्था हो जाने के बाद भी अनेक व्यवसाय उद्योग ऐसे थे जिनमें बहुत से लोगों का जीवन यापन होता था। इनमें से एक रथ निर्माण का उद्योग प्रमुख था क्योंकि राजदरबार के हर छोटे.बड़े कर्मचारी को रथ की आवश्यकता होती थी। आवागमन का सबसे सुचारू और श्रेष्ठ साधन रथ था , इसलिए तीनों वर्णों से अलग रथ निर्माण कर्ताओं की एक अलग श्रेणी बन गयी थी ऐसा ब्राह्मण ग्रंथ , उपनिषद, संहिताओं और आरण्यको से ज्ञात होता है। इस प्रकार रथ निर्माण उद्योग के अतिरिक्त भी अनेक छोटे.मोटे अन्य शिल्प व्यवसाय भी प्रचलन में थे। जैसे अजापाल ;बकरी पालने वाला, अयस्ताप - लौहार, लोहा लगाने वाला, अविपाल - गडरिया, इषुकार- गन्ना पेरने वाला , कंटककार - कर्मार; कुम्हारकारि; नर्तक - किरात; वन के छोटे-मोटे कार्य, कीनाश; खेतिहर- गोपाल; ग्वाला।

आचार्य पी .वी.काणे ने अपने धर्मशास्त्र के इतिहास में उपयुक्त विभिन्न आजीविका के उपायों का उल्लेख किया है। इन्होने अपने धर्मशास्त्र के इतिहास में 62 प्रकार के लोगों का उल्लेख किया है जो ग्रामीण जीवन की महत्वपूर्ण कड़ी हैं और ग्रामीण जीवन की सामजिक एवं आर्थिक व्यवस्था का संचालन करते थे।

ग्राम - वेदों में ग्राम शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम ऋग्वेद के प्रथम मंडल के 44 वें अध्याय में मिलता है :

अग्ने पूर्वा अनुषसो विभावसो दीदेथ विश्वदर्शतः
असि ग्रामेन्ववविता पुरोहितोअसि यज्ञेषु
मानुषःद्य।। ऋग्वेद ;1.44.10.

प्रातःकाल के पूर्व ही प्रदीप्त होने वाले जगत के लिए दर्शनीय दीप्तिवान है अग्ने! तू यज्ञो और मनुष्यों के अग्रणी नेता की भांति यजनीय तथा ग्रामादि को संरक्षित करने वाला है।

इसके बाद अथर्ववेद और वाजसनेयी संहिता में भी ष्ग्रामष् शब्द का प्रयोग मिलता है:

श्पिशाचैः स शुकोमिन स्तेनैर्न वनर्गुभिः
पिशाचास्तस्मान्नश्यन्ति यमः
ग्राममाविशेद्यद्य।। अर्थववेद; 4.36.3।।

पिशाच हमारे शरीर में प्रविष्ट नहीं हो सकते, हम चोर और डाकुओं से नहीं मिलते , उस गाँव के पिशाच शीघ्र नष्ट हो जाते हैं, जिस गाँव में हम प्रवेश करते हैं। इससे यह प्रतीत होता है कि आर्य प्रायः गाँवो में ही रहते थे और गाँव के पास.पास बसे हुए थे। शतपथ ब्राह्मण और छान्दोग्य ब्राह्मण में गांवों का वर्णन मिलता है। गाँव छोटे और बड़े दोनों प्रकार के होते थे। बड़े गाँवों को महाग्राम कहा जाता था। गाँव के पशु.पक्षी और अरण्य के पशु.पक्षी और पौधे अलग.अलग होते थे। इसका वर्णन ऋग्वेद के 10.90.8 में मिलता है.:

तस्माद्यनात सर्वहुतः संभृतं प्रंपदज्यम
पशून ताश्चक्र वायव्यानान्र्यान ग्राम्याश्च
यद्यद्य।। ऋग्वेद 10.90.8

उस सर्वहुत यज्ञ से तृप्तिकारक आज्य की उत्पत्ति हुई उससे वायु में विचरण करने वाले वनों और गामों में निवास करने वाले मनुष्यों की उत्पत्ति हुई। अथर्ववेद, तैतीरिय संहिता 7.2.2 तथा वृहदारण्यक उपनिषद के अनुसार गांवो में मवेशी, घोड़े तथा पालतू पशु होते थे। ऋग्वेद के 10 वें मंडल 10.62.11 तथा अथर्ववेद के 3.5.7 में ग्राम के प्रमुख या मुखिया को ग्रामणी के नाम से जाना जाता था :

सहस्त्रदा ग्रामणीर्नारिषन्मनुः सूर्येणास्य यतमानैतु दक्षिणाद्य
सावर्णेदेवाः प्र तिरनत्वायुस्मिन्श्रानता आसनाम
वाजमद्यद्य।। ऋग्वेद 10.62.11

ये राजानो राजकृतः सूतः ग्रामन्पश्च येद्य

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उपस्तीन पर्ण मह्म त्वं सर्वनी कृण्वभीतो जनानद्यद्य।। अथर्ववेद 3.5.7

ग्रामीणों को गाँव के लोगों के द्वारा तथा कभी - कभी वंहा के राजा के द्वारा निर्धारित किया जाता था क्योंकि गांवो में वह राजा के समान माना जाता थाद्य गावों की अपनी एक न्यायालय भी होता थी। जिसके न्यायधीश को ग्रामवादीन के नाम से जाना जाता था।

उपयुक्त उल्लेखों के अनुशीलन से हमें गाँवों के आकार पशु-पक्षी एवं वहां के व्यवसाय तथा ग्राम जीवन की सम्पूर्ण स्थिति का पता चलता है।

वैदिक युग में अनेक छोटे.छोटे शिल्पों एवं गृह उद्योगों का विकास हो चूका था जैसे वस्त्र उद्योग, चर्म उद्योग, रथ निर्माण और तराशी हुई लकड़ी के अतिरिक्त चटाई बनाने के काम का प्रचलन था। अथर्ववेद में चटाई तथा गद्दे बनाने के लिए क्षिप्र शब्द का प्रयोग हुआ है। चटाई बनाने के लिए स्त्रियाँ नरकट को पत्थर से कूटकर महीन बना लेती थी और उसके पश्चात् वेतस से चटाई बनाने का कार्य किया जाता था। अथर्ववेद की ऋचा 6.138.5 में चटाई बनाने के लिए वेतस को किस प्रकार फाड़ना और किस प्रकार चीरना है उसका वर्णन किया गया है :

यथा नडम कशिपुने स्त्रियो भिन्दन्त्यश्मनाद्य एवा भिनदीन ते शेपोअमुन्या अधि मुन्कयोःद्यद्य।। अथर्ववेद 6.138.5

नड नामक वृक्षों को जिस प्रकार स्त्रियाँ पत्थरो से कूटती हैं वैसे ही हम तेरे अन्डकोशों को पत्थरों से कूटते हैं। उस समय धन संपन्न लोग इन चटाइयों पर सोने एवं चाँदी की झालरों का उपयोग करते थे।

वैदिक युग में जिन आवश्यक सामग्रियों की आवश्यकता थी वे गाँवों में पूर्ण रूप से उपलब्ध थी। गावों के निवासी पशुपालन तथा कृषि कर्म से अनेक आवश्यकताओ की पूर्ति कर लेते थे जैसे कृषि कर्म से अन्न आदि भोज्य पदार्थ तथा पशुपालन से दूध घी दही मख्खन आदि प्राप्त कर लेते थे। गावो के लोग जाड़े के दिनों में ठण्ड से बचने के लिए भेड़ तथा बकरियों के उन से कम्बल आदि बनांते थे। उस समय रुई की पैदावार खूब अधिक मात्रा में होती थी जिसके द्वारा सूत कातकर अच्छे कपडे बनाये जाते थे। ऋग्वेद में स्त्रियो के द्वारा कपडे बनाने का उल्लेख प्राप्त होता है :

साध्वन्पासी सनता न उक्षिते उषासानवता वय्येवरग्वितेद्य
तंतु ततं सवयंती समीचीयज्ञस्य पेशःसुदुधेपयस्वतीद्यद्य।। ऋग्वेद 2.3.6

यज्ञ को शोभायमान करने वाली उषाओं रात्रि देवियाँ शब्द करती तथा उत्तम कार्यो के निमित्त प्रेरणा देती हुई पूजी जाती है। बुनने की प्रक्रिया करने वाली थे। देवियाँ सभी प्रकार की कामनाओं को पूर्ण करती तथा अन्न दुग्ध आदि प्रदान करती है।

वैदिक ग्रामों में जीवन को रसमय बनाने के लिए पर्याप्त मात्रा में साधन उपलब्ध थे। सामवेद में इस बात का प्रमाण हैं कि उस समय जनजीवन संगीत विद्या से पूर्ण से परिचित था।

कृषि - यद्यपि वर्तमान में हमारे देश को कृषि प्रधान देश कहा गया है। इसकी लगभग एक तिहाई जनसंख्या कृषि कार्य पर निर्भर है। उस समय के वैदिक समाज में भी कृषि द्वारा जीवनयापन होता था। समाज के ग्रामीण लोग धरती को अपनी माता तथा खेतों को कर्मभूमि मानकर पूजते थे, क्योंकि धरती पर कृषि करके अन्न प्राप्त किया जाता था।

कृषि जीवन की प्रगति में जहां एक ओर जन-जीवन को आत्म निर्भर बनाया वहीं दूसरी ओर

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

बुरे व्यवसनों में फंसे हुए लोगों को अच्छे मार्ग पर लाने का कार्य भी किया। इसके अन्तर्गत जुआ न खेलो , खेती करो का निर्देश दिया जो ('अक्षैर्माः दिव्यः कृषि मित्कृषत्व ') ऋग्वेद 10/34/3 में निर्दिष्ट किया गया है। 'ऋग्वेद' में कृषि योग्य भूमि के अनेक रूपो का वर्णन मिलता है जो ऋग्वेद के 1/127/6 इस ऋचा में दर्शाया गया है। जो निम्न है :

स हि शर्धो न मारूतं तुलिष्वगिरप्नस्वतीषर्वश स्विष्टरिार्तनास्विष्यनिः। आदेद्धव्यान्यादेदिर्यज्ञस्य केतुरर्हणा। अधस्मास्यं हर्षतो हषीवता विश्वेजुषन्तु पन्थां नरः शुभे न पन्थाम्। 1/127/6

वायु के समान 'उच्चस्वर गर्जन करने वाला यजनीय अग्नि हवियें को स्वीकार करें हविरूप अन्न को गृहण करता है सम्पूर्ण देवता उसके मार्ग का अनुसरण करते हैं। मरूदगणों के समान यह अग्नि उपजाऊ क्षेत्रों और युद्ध भूमि सभी स्थानों पर 'यज्ञ' योग्य एवं पूजनीय है।

ऋग्वेद में खाद व सिंचाई व्यवस्था का निर्देश भी दिया गया है। ऋग्वेद (7/46/2) और अथर्ववेद के (1/06/04) में सिंचाई व्यवस्था नदी , कूपों के माध्यम से करने का वर्णन है। इसके अतिरिक्त आज की भांति वैदिक काल में भी हल को प्रमुख साधन माना जाता था। उसके विभिन्न रूप 'पवीखत या पवीखम (नुकीला) सुशीमम् और त्सरू (किचनी मुट्ठी वाला) आदि है।

ऋग्वेद, अथर्ववेद, तैत्तरीय ब्राहमण और वाजसनेयि संहिता में हल को 'सीर' कहा गया है। हल के विभिन्न रूपों का वर्णन ऋग्वेद (4/57/4) अथर्ववेद (2/8/4), तैत्तरीय संहिता (6/617/4), निरूक्त (6/26) और आपस्तम्ब सूत्र में (22/4/7) आदि में हल (लांगर) के अनेक रूपों का वर्णन किया गया है।

पशुपालन : वैदिक काल में पशुओं के लालन पालन तथा विभिन्न उपयोग का वर्णन प्राप्त होता है। वस्तुतः कुछ प्रमुख पशुओं द्वारा कृषि , माल-ढुलाई सवारी, भारी सामान को लाने ले जाने, पानी खींचने तथा दूध निकालने आदि में किया जाता था। इस प्रकार पशु उनके धार्मिक कार्यों में नहीं वरन् आर्थिक कार्यों में भी सहयोगी थे जिसका प्रभाव वैदिक संस्कृति व क्रिया -कलापों पर पड़ता था। ऋग्वेद में पुरूष-सूक्त ' में 'मनु-प्राण' के पांच भेदों का वर्णन मिलता है जो कि पुरूष (मनुष्य) अश्व, गौ, अज तथा मेष है।

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः गावो हि जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः।।

निष्कर्ष

इस संदर्भ से यह ज्ञात होता है कि मनुष्य अपने कार्यों में पशु-पक्षियों को सहयोगी बनाकर उनसे कार्य लेता था। पशु-पक्षियों में 'अरण्यानी-सूक्त' ऋग्वेद तथा अन्य वैदिक ग्रन्थों में निम्न पशु-पक्षियों का वर्णन मिलता है। गौ , अश्व, अश्वत्तर (खच्चर), मेष, महिष, ऊष्ट्र, छाग, अज, गर्दभ, हस्ती, व्याघ्र, वृक, सिंह, कुक्कर, वृष और मृग (हरिण) आदि। इसी प्रकार पक्षियों में उल्लूक , शुक, मृग, वृष्ण, शकुन, श्येन (बाज) , वर्तिक (बत्तख) , कपिंजर, तित्तिर और चक्रवाक आदि नाम से विशेष उल्लेखनीय हैं। वैदिक साहित्य में 'गाय' को विशेष महत्व दिया गया है, उसे माता, भगिनी, पुत्री, अदितिरूपा और अमृत का उत्पत्ति स्थान माना है। ऋग्वेद के (6/28) में 'गौ सूक्त' में गाय का विशेष स्थान है इसलिये 'गौ-दान' को सर्वोत्तम दान कहा है। इस आधार पर हमें यह ज्ञात होता है ,कि ग्रामीण-जीवन का आरंभ वैदिक युग मे हो चुका था , और अनेक क्रिया-कलापों के द्वारा वे आर्थिक,सामाजिक एवं धार्मिक कार्यो का संचालन करते थे।